हिन्दी नियोजित कार्य - 2020

विषय: हिन्दी ज्ञानपीठ पुरस्कृत कवियों का परिचय

सेवा से,

क्रिस्टल डिसोजा
I बि. कॉम. 'ऽ' , 190102
पदुवा कॉलेज आफ
कामर्स ऑड मानेजमेंट

सेवा में,

श्री रमेश
हिन्दी विभाग
पदुवा कॉलेज ऑफ
कामर्स ऑड मानेजमेंट

दिनांक : 10-02-2020

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
01.	सुमित्रानंदन पन्त	01.
02.	रामधारी सिंह दिनकर	02.
03.	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय	03.
04.	महादेवी वर्मा	04.
05.	नरेश मेहता	05.
06.	निर्मल वर्मा	06.
07.	कुँवर नारायन	07.
08.	अमरकान्त	08.
09.	श्रीलाल शुक्ल	09.
10.	केदारनाथ सिंह	10.
11.	कृष्णा सोबती	11.

Scanned with CamScanner

सुमित्रानन्दन पन्त

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म अल्मोड़ा ज़िले के कौसानी नामक ग्राम में २० मई १९०० ई. को हुआ। जन्म के छह घंटे बाद ही उनकी माँ का निधन हो गया। उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। उनका नाम गोसाईं दत्त रखा गया। वह गंगादत्त पंत की आठवीं संतान थे। १९१० में शिक्षा प्राप्त करने गवर्नमेंट हाईस्कूल अल्मोड़ गये। यहीं उन्होंने अपना नाम गोसाईं दत्त से बदलकर सुमित्रानन्दन पंत रख दिया। १९१८ में हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर म्योर कॉलेज में पढ़ने के लिए इलाहाबाद चले गये। इलाहाबाद में ही उनकी काव्यचेतना का विकास हुआ। महात्मा गाँधी के सान्निध्य में उन्हें आत्मा के प्रकाश का अनुभव हुआ। १९५० में 'युगवाणी' से 'वाणी' काव्य संग्रहों की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन 'चिदम्बरा' प्रकाशित हुआ, जिसपर १९६८ में उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनकी मृत्यु २८ दिसम्बर १९७७ को हुई।

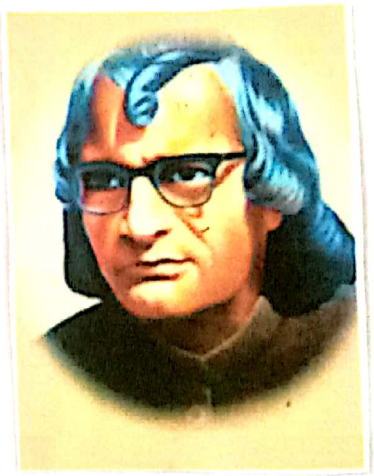

Scanned with CamScanner

रामधारी सिंह दिनकर

'दिनकर' जी का जन्म २८ सितंबर १९०८ को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास राजनीति विज्ञान में बीए किया। उन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू का गहन अध्ययन किया था। बी.ए. की परिक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक हो गये। उन्हें पद्म विभूषण की इस उपाधि से भी अलंकृत किया गया। उनकी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उर्वशी के लिए १ भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

अपनी लेखनी के माध्यम से वह सदा अमर रहेंगे। द्वापर युग की ऐतिहासिक घटना महाभारत पर आधारित उनके प्रबन्ध काव्य कुरुक्षेत्र को विश्व के १०० सर्वश्रेष्ठ काव्यों में ७४ वाँ स्थान दिया गया। उनकी मृत्यू २४ अप्रैल १९६४ को हुई।

Scanned with CamScanner

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

'अज्ञेय' जिका जन्म 7 मार्च 1911 को कुसया में हुआ। बचपर 1911 से 15 तक लखनऊ में निता। प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा पिता की देख रेख में घर पर ही संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला भाषा व साहित्य के अध्ययन के साथ हुई। बाद में बी. एससी. करके अंग्रेजी में एम. ए. करते समय क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़कर बम बनाते हुए पकड़े गये और वहाँ से फरार भी हो गये। सन् 1930 ई. के अन्त में पकड़ में लिये गये। अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनूदित किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के एकान्तमुखी प्रखर कवि होने के साथ-साथ वे अच्छे फोटोग्राफर और सत्यान्वेषी पर्यटक भी थे। सन् 1978 में 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। उनकी मृत्यु 4 अप्रैल 1987 को हुई।

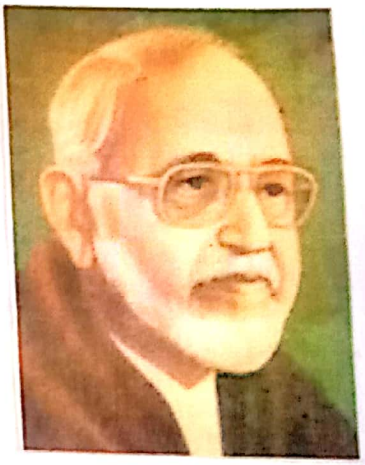

Scanned with CamScanner

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा जी का जन्म २६ मार्च 1907 को प्रातः 7 बजे फ़र्रूखाबाद उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ। उनके परिवार में लगभग २०० वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम ~~महादेवी~~ हेमरानी देवी था। महादेवी जी कि शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई। बीच में विवाह जैसी बाधा में पड़ जाने के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही।

विवाहोपरान्त महादेवी जी ने १९१९ में क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया। १९२१ में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन का शुरुआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं। इनके 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। उनकी मृत्यु 11 सितंबर 1987 को हुई।

Scanned with CamScanner

नरेश मेहता

नरेश मेहता का जन्म सन् 15 फ़रवरी, 1922 में मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर कस्बे में हुआ। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए. किया। इन्होंने आल इण्डिया रेडियो इलाहाबाद में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में कार्य किया था। नरेश मेहता दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नयी व्यंजना के साथ नया आयाम दिया। रागात्मकता, संवेदना और उदात्तता उनकी सर्जना के मूल तत्त्व हैं, जो उन्हें प्रकृति और समूची सृष्टि के प्रति पर्युत्सुक बनाते हैं. आर्ष परम्परा और साहित्य को श्रीनरेश मेहता के काव्य में नयी दृष्टि मिली। साथ ही, प्रचलित साहित्यिक रुझानों से एक नवह की दूरी ने उनकी काव्य-शैली और संरचना को विशिष्टता दी। नरेश मेहता को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए 1992 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 2000 में मेहता जी का निधन हो गया।

Scanned with CamScanner

निर्मल वर्मा

निर्मल वर्मा जि का जन्म 3 अप्रैल 1929 में को शिमला में हुआ था। दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम ए करने के बाद कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन किया। निर्मल वर्मा हिन्दी के आधुनिक कथाकारों में एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार थे। शिमला में जन्मे निर्मल वर्मा को मूर्तिदेवी पुरस्कार, साहित्य अकादमी और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार से और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। परिंदे से प्रसिद्धि पाने वाले निर्मल वर्मा कि कहानियाँ अभिव्यक्ति और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ समझी जाती है। हिन्दी कहानी में आधुनिक-बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का अग्रणी स्थान है। उन्होंने कम लिखा है परंतु जितना लिखा है उनमे से ही वे बहुत ख्याति पाने में सफल हुए है। उनकी मृत्यू 25 अक्टूबर 2005 को हुई।

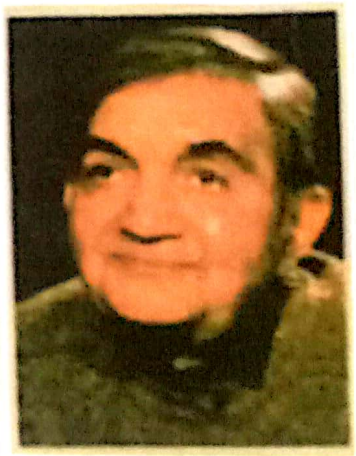

Scanned with CamScanner

कुँवर नारायण

कुँवर नारायण जि का जन्म 19 सितम्बर 1927 को फैईजाबाद में हुआ था। उन्होंने इंटर तक की पढ़ाई विज्ञान विषय से की लेकिन आगे चलकर वे साहित्य के विद्यार्थी बने और १९५१ में लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. किया। पहले माँ और फिर बहन की असामयिक मौत ने उनकी अन्तरात्मा को झकझोर कर रख दिया, पर टूट टूट कर भी जुड़ जाना उन्होंने सीख लिया था। पैतृक रूप में उनका कार का व्यवसाय था, पर इसके साथ उन्होंने साहित्य की दुनिया में भी प्रवेश करना मुनासिब समझा।

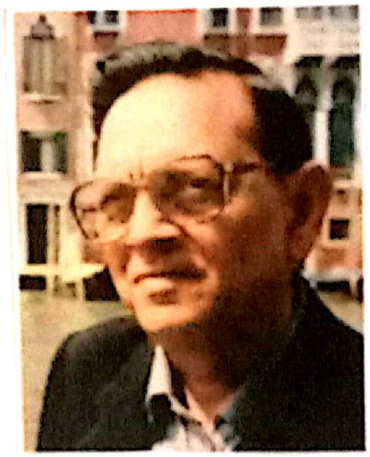

नई कविता आन्दोलन के सशक्त हस्ताक्षर कुँवर नारायन अज्ञेय संपादित तीसरा सप्तक के प्रमुख कवियों में रहे हैं। 2009 में उन्हें वर्ष 2005 के लिए भारत के साहित्य जगत के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी मृत्यू 15 नवंबर 2017 को हुई।

Scanned with CamScanner